



बढ़ते कदम

वर्ष-14
अंक-10
2016

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी



यादों के गलियारे से

साहिबगंज रेलवे स्टेशन पर आयोजित हिन्दी कार्यशाला के कुछ अविस्मरणीय दृश्य



विषय वस्तु

प्रसंगवश—	
—रामाशीष सिंह—	3
मंडल की उपलब्धियां	4
मेलजोल, भाईचारे—	
— शहनवाज	5
नई शुरुआत —	
— अभिलाषा कुमारी	6
कुंदन लाल सहगल—	
— दीपक कुमार	7
भारतीय संस्कृति...	
— के के शुक्ल	9
स्वच्छता और जैव शौचालय	
— शुभेंदु	12
विस्मिल्लाह खाँ	
—दयाल कुजूर	15
आन लाइन...	
— दिव्येन्दु भट्टाचार्य—	16
नई खोजें	
— मिंटू सिंह	17
ऋतुराज —	
— विजय कुमार	18
छाया समाचार	19
चित्र वीथिका	20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं
इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्व रेलवे/मालदा
फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)

Email – Rajbhasha.malda@gmail.com
Web: www.ier.indianrailway.gov.in

माखनलाल चतुर्वेदी

चाह नहीं मैं सुरबाला के, गहनों में गूँथा जाऊँ
चाह नहीं, प्रेमी-माला में, बिंध प्यारी को ललचाऊँ

.....
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक

हिन्दी जगत के सुप्रसिद्ध कवि, लेखक व पत्रकार पं. माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल 1889 को बावई, होशंगाबाद (मध्यप्रदेश) में हुआ। आपने हिंदी एवं संस्कृत का अध्यापन किया। आप **कर्मवीर** राष्ट्रीय दैनिक के संपादक रहे। आप भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रहे।

हिमकिरीटिनी, हिम तरंगिणी, युग चरण, समर्पण, मरण ज्वार, माता, वेणु, लो गूँजे धरा, बीजुरी, काजल, आँज, रही आदि इनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ और कृष्णार्जुन युद्ध, साहित्य के देवता, समय के पांव, अमीर इरादे : गरीब इरादे आदि आपकी प्रसिद्ध गद्यात्मक कृतियाँ हैं। 'हिम-तरंगिणी' पर आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। चतुर्वेदीजी की रचनाएँ अत्यंत लोकप्रिय हुईं सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के वे अनूठे हिंदी रचनाकार थे। प्रभा और **कर्मवीर** जैसे प्रतिष्ठित पत्रों के संपादक के रूप में आपने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जोरदार प्रचार किया और नई पीढ़ी का आह्वान किया कि वह गुलामी की जंजलों को तोड़ कर बाहर आए। इसके लिये उन्हें अनेक बार ब्रिटिश साम्राज्य का कोपभाजन बनना पड़ा। पर वे सच्चे देशप्रेमी थे और 1921-22 के असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए जेल भी गए। आपकी कविताओं में देशप्रेम के साथ साथ प्रकृति और प्रेम का भी सुंदर चित्रण हुआ है।

गाँधीजी का राष्ट्रीय परिदृश्य के केंद्र में आगमन हो चुका था। तभी मासिक पत्रिका 'प्रभा' के संपादन का दायित्व माखनलालजी को सौंपा गया। सितंबर 1913 में उन्होंने अध्यापक की नौकरी छोड़ दी और पूरी तरह पत्रकारिता, साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन के लिए समर्पित हो गए। 1916 के लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन के दौरान माखनलालजी ने विद्यार्थीजी के साथ मैथिलीशरण गुप्त और महात्मा गाँधी से मुलाकात की। महात्मा गाँधी द्वारा आहूत सन 1920 के 'असहयोग आंदोलन' में महाकोशल अंचल से पहली गिरफ्तारी देने वाले माखनलालजी ही थे। सन 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी उन्हें गिरफ्तारी देने का प्रथम सम्मान मिला।

- रामाशीष सिंह

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक	परामर्श	प्रधान संपादक	संपादक	कार्यकारी संपादक	सहयोग
राजेश अर्गल मंडल रेल प्रबंधक	सुब्रतो सरकार अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक	रामाशीष सिंह राजभाषा अधिकारी(प्रा.)	सच्चिदानंद क. अनुवादक	इंद्र ज्योति राय क. अनुवादक	दयामय दास, कनिष्ठ इंजीनियर निलेश कुमार, एएलपी

मंडल की उपलब्धियां

- ⇒ नीमतीता रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या 1 एवं 3 पर पांच सीलिंग फैन लगाए गए हैं साथ ही बड़हरवा स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या 2 यात्रियों की सुविधा के लिए पर 3 सीलिंग फैन लगाए गए।
- ⇒ यात्रियों की सुविधाओं के लिए साहिबगंज, कहलगांव एवं पीरपैंती स्टेशनों पर 22 सीलिंग फैन लगाए गए।
- ⇒ साहिबगंज, पीरपैंती स्टेशनों पर प्रकाश की व्यवस्था सुधारने के लिए 1X28 वाट टी-5 फिटिंग्स वाले 23 उपकरण लगाए गए।
- ⇒ महिपाल रोड रेलवे स्टेशन पर प्रकाश की व्यवस्था सुधारने के लिए 1X28 वाट टी-5 फिटिंग्स वाले 16 उपकरण लगाए गए।
- ⇒ पूजा की भीड़ को संभालने के लिए मालदा से हरिद्वार के लिए 3 एसी कोच तथा 15 स्लीपर कोच वाली एक विशेष रेलगाड़ी 05 ट्रिप चलाई गई।
- ⇒ प्रकाश की व्यवस्था सुधारने के लिए इन्कैनडीसेंट लाइट के स्थान पर टी-12 फिटिंग्स वाले 51 सीएफएल लाइट साहेबगंज, पीरपैंती तथा कहलगांव एवं कुछ अन्य रोडसाइड स्टेशनों पर लगाए गए।
- ⇒ प्रकाश की व्यवस्था सुधारने के लिए 1X15 वाट वाले 50 सीएफएल लाइट न्यू फरक्का, जामिरघाटा एवं खालतीपुर स्टेशनों पर लगाए गए।
- ⇒ भागलपुर, जमालपुर और सुलानगंज तथा मालदा स्टेशनों पर कुल 56 नलों की व्यवस्था पेयजल हेतु की गई।
- ⇒ मालदा मंडल में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कुल 103 कार्मिकों इसमें हिस्सा लिया।
- ⇒ मालदा मंडल के विभिन्न मानव रहित एवं मानव सहित समपार फाटकों पर सड़क उपयोगकर्ताओं के मध्य पर्चे बांटकर उन्हें रेल क्रॉसिंग पार करने जानकारी उपलब्ध कराई गई।
- ⇒ मंडल के मुख्यालय, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, मालदा के कल्याण अनुभाग में पारिवारिक पेंशनरों की सुविधा हेतु आनलाइन डीजिटल जीवन प्रमाण पत्र जारी करने के लिए नवंबर 2015 के प्रथम सप्ताह से लगातार चल रहा है तथा यह जनवरी 2016 के अंतिम सप्ताह तक लगातार जारी रहा।

मेलजोल, भाईचारे का मेला : फूल वालों की सैर

यदि दिल्ली की गंगा जमुनी तहजिब, मेलजोल, भाईचारे को किसी मेले की सूत में देखना है तो फूल वालों की सैर से बेहतर कुछ नहीं। आपसी प्रेम और अपनापन का प्रतीक फूल वालों की सैर का आयोजन करीब दो सौ सालों से हो रहा है। फूल वालों की सैर या सैर-ए गुल फरोशां दिल्ली के सांप्रदायिक सौहार्द्र का बड़ा उत्सव है। बरसात के बाद सर्दियां शुरू होने के पहले यह उत्सव मनाया जाता है, जो करीब एक हफ्ते चलता है।

इस उत्सव का केन्द्र मेहरौली होता है, जिसे दिल्ली के सबसे पुराने आबाद गांवों में से एक माना जाता है। मेहरौली में कुतुब मीनार से कुछ ही दूरी पर ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की दरगाह है। फूल वालों की सैर के दौरान यहां हिंदू और मुसलमान दोनों समुदायों के लोग फूलों की चादर चढ़ाते हैं।

दरगाह से कुछ ही दूरी पर योगमाया का मंदिर है। फूल वालों की सैर के दौरान यहां भी दोनों समुदायों के लोग फूलों का पंखा और छत्र चढ़ाते हैं। इस तरह यह उत्सव आपसी सद्भाव और मेलजोल का संदेश देता है। इन दोनों कार्यक्रमों के अतिरिक्त हौज शम्शी के पास के मैदान में कुश्ती, पतंगबाजी और अन्य प्रतियोगिताओं के अलावा कव्वाली और अलग-अलग प्रदेशों के आये नृत्य समूहों के कार्यक्रम भी होते हैं।

फूल वालों की सैर की शुरुआत ढहते हुए मुगल शासन के दौरान 1812 ई। में हुई। यद्यपि अकबर शाह द्वितीय (1808-1837) बादशाह थे, लेकिन सारे महत्वपूर्ण निर्णयों में अंग्रेजों की दखल बंद चुकी थी। आर्चिबाल्ड सीटन उस समय मुगल दरबार में रेजीडेंट नियुक्त था, जिसका काम बादशाह को सलाह देना था। लेकिन वास्तविक अर्थों में सारे महत्वपूर्ण निर्णयों में उसकी सहमति अनिवार्य थी। अकबर शाह द्वितीय अपने बड़े पुत्र मिर्जा सिराजुद्दीन जफर को कम पसंद करते थे और उन्हें वली अहद (युवराज) नहीं बनाना चाहते थे।

बादशाह अपने छोटे शहजादे मिर्जा जहांगीर को वली अहद बनाना चाहते थे, क्योंकि वे उनकी मां मुमताज महल बेगम को बेहद प्यार करते थे। अंग्रेज रेजीडेंट को मिर्जा जहांगीर पसन्द नहीं थे। वे चाहते थे बादशाह के बड़े बेटे मिर्जा जफर को ही वली अहद बनाया जाये। मिर्जा जहांगीर अंग्रेज रेजीडेंट के इस रुख से बेहद नाराज थे और उन्होंने एक बार भरे दरबार में रेजीडेंट सीटन को अपमानित किया था।

कुछ ही दिनों बाद लाल किले के नक्काखाने से मिर्जा जहांगीर ने रेजीडेंट पर गोली चला दी। निशाना चूक गया, रेजीडेंट बच गया लेकिन उसका अर्दली मारा गया। इस हमले से नाराज सीटन ने मिर्जा जहांगीर को कैद करवा लिया। उन्हें दिल्ली बदर करके इलाहाबाद भेज दिया गया।

इस घटना से मिर्जा जहांगीर की मां को बेहद रंज हुआ। वे अपने बेटे के बारे में बहुत चिंतित थीं। उन्होंने मन्नत मांगी कि यदि मिर्जा जहांगीर वापस आ जाते हैं तो वे मेहरौली जाकर ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की दरगाह पर फूलों की चादर चढ़ाएंगी। बाद में बादशाह और रेजीडेंट के बीच समझौता हुआ। बादशाह मिर्जा सिराजुद्दीन जफर को वली अहद बनाने के लिए तैयार हो गए और मिर्जा जहांगीर को वापस दिल्ली आने की छूट दे दी गई।

मिर्जा जहांगीर के वापस आने के बाद बादशाह अपने पूरे कुनबे के साथ मेहरौली गये और ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की दरगाह पर फूलों की चादर चढ़ाई। साथ ही योगमाया के मंदिर पर फूलों का पंखा चढ़ाया। इस दौरान प्रजा भी बादशाह की खुशी में शरीक रही। कई दिनों तक मेहरौली के इलाके में उत्सव का माहौल रहा।

यह उत्सव बादशाह को इतना पसंद आया कि उन्होंने अपनी प्रजा को सलाह दी की क्यों न हर साल इसी तरह यह उत्सव मनाया जाये। तब से हर साल फूल वालों की सैर के उत्सव की शुरुआत हो गई। हर साल बरसात के बाद

बादशाह सैर की तारीख मुर्कर कर देते थे। उसके बाद पूरे शहर में शहनाई बजाकर इस कार्यक्रम की उद्घोषणा की जाती। यह उत्सव 1857 ई. में मुगल शासन के समाप्त होने के बाद भी जारी रहा। 1942 में 'भारत छोड़ो' आंदोलन के दौरान ब्रिटिश हुकूमत ने हिंदू-मुसलमान समुदायों के बीच एकता के इस उत्सव को बंद कर दिया। 1961 ई. में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने तत्कालीन दिल्ली के मेयर नूरुद्दीन अहमद और कुछ अन्य मानिन्द नागरिकों से इस उत्सव को फिर से शुरू करने की बात कही। इस तरह यह उत्सव फिर से शुरू हो गया और आज भी जारी है।

— शहनवाज

नई शुरुआत

लघु कथा

— चोकाडोल चलोगे,

इस शब्द ने जैसे मन्नू के कानों में शहद घोल दिया, वह अभी घर से रिकशा लेकर बड़ी चौक पहुँचा ही था, ऐसा कभी - कभार ही होता था कि पहुँचते ही सवारी मिल जाए, कई बार तो घंटों इन्तजार करना पड़ जाता था, हाँ क्यों नहीं, बैठ जाइए, वो चहकते हुए बोला— कितना लोगे सवारी ने पूछा?

— आठ रुपये

— चोकाडोल के आठ रुपये

— ज्यादा नहीं मांग रहा हूँ बाबूजी, बोहनी का वक्त है इसलिए आठ ही मांग रहा हूँ, वरना तो दस रुपये से कम नहीं लेता।

— रहने दे, सिखा मत, छः रुपये लेना है तो बोल, वरना अभी बस आने ही वाली है। बस का नाम सुनते ही मन्नू कुछ सोच में पड़ गया, फिर बोहनी करनी थी सो वह छः रुपये मैं सवारी को ले जाने के लिए तैयार हो गया। सवारी के बैठते ही मन्नू ने चढ़ा दिए पैडल पर पैर।

चोकाडोल पहुँचकर सवारी जब उसे पाँच रुपये का नोट देने लगा तो उसने पूरे छः रुपये मांगे जैसा कि किराया तय हुआ था। पर खुले पैसे नहीं होने की समस्या बताई सवारी ने। मन्नू ने बुरा सा मुँह बनाया और बोला— खुले पैसे नहीं है, मैं सब समझता हूँ, आप लोगों की यह आदत है कि किराया तय कर लो फिर खुले पैसे नहीं होने का बहाना बनाकर कम पैसे में सफर कर लो।

यह सुनकर सवारी पास ही पान वाले कि दुकान पर चला गया, पान वाले ने कुछ लिए बगैर खुले देने से मना कर दिया। पान वाले की इस बात पर सवारी ने कहा— मैं कुछ खाता तो हूँ नहीं एक रुपये कुछ भी दे दे यार, वो रिकशे वाले को किराया देना है।

पान वाले ने उसे एक गुटखा देते हुए खुले रुपये पकड़ा दिए। सवारी ने गुटखा फाड़ कर मसाला मुँह में डाला और मन्नू को एक रुपया पकड़ा दिया और अपनी राह पर चल दिया। मन्नू को खुद पर ही हँसी आ गयी, एक रुपया जो उसका जायज हक था वो तो दे दिया लेकिन सवारी ने उसे वह एक रुपया देने के बजाय स्वयं एक गलत आदत की शुरुआत कर लिया। कहां तो, उसने पान वाले से कहा था कि वह कुछ खाता नहीं है और जब पान वाले ने उसे गुटका थमा दिया तो उसने बड़े आराम से वह जहर की पुड़िया अपने मुँह में डाल दिया। मन्नू को अब अपने पर ग्लानि हो रही थी कि उसके कारण एक व्यक्ति को नई शुरुआत करनी पड़ी। उसने आसमान की ओर देखा और चल दिया नई सवारी की तलाश में।

— अभिलाषा कुमारी

कुन्दन लाल सहगल

कुन्दन लाल सहगल यानी के. एल. सहगल का जन्म- 11 अप्रैल, 1904 को जम्मू के नवाशहर में हुआ था। उनके पिता अमरचंद सहगल जम्मू शहर में न्यायालय के तहसीलदार थे। बचपन से ही सहगल का रुझान गीत-संगीत की ओर था। उनकी मां केसरीबाई कौर धार्मिक क्रिया-कलापों के साथ-साथ संगीत में भी काफ़ी रुचि रखती थीं।

सहगल ने किसी उस्ताद से संगीत की शिक्षा नहीं ली थी, लेकिन सबसे पहले उन्होंने संगीत के गुरु एक सूफ़ी संत सलमान युसूफ से सीखे थे। सहगल की प्रारंभिक शिक्षा बहुत ही साधारण तरीके से हुई थी। उन्हें अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देनी पड़ी थी और जीवन यापन के लिए उन्होंने रेलवे में टाईमकीपर की मामूली नौकरी भी की थी। बाद में उन्होंने रेमिंगटन नामक टाइपराइटिंग मशीन की कंपनी में सेल्समैन की नौकरी भी की। कहते हैं कि वे एक बार उस्ताद फैयाज खां के पास तालीम हासिल करने की गरज से गए, तो उस्ताद ने उनसे कुछ गाने के लिए कहा। उन्होंने राग दरबारी में खयाल गाया, जिसे सुनकर उस्ताद ने गद्गद् भाव से कहा कि बेटे मेरे पास ऐसा कुछ भी नहीं है कि जिसे सीखकर तुम और बड़े गायक बन सको।



सहगल हिन्दी फिल्मों में वैसे तो एक बेमिसाल गायक के रूप में विख्यात हैं लेकिन देवदास जैसी चंद फिल्मों में अभिनय के कारण उनके प्रशंसक उन्हें एक उम्दा अभिनेता भी करार देते हैं। कुन्दन लाल सहगल हिंदी सिनेमा के पहले सुपरस्टार कहे जा सकते हैं। 1930 और 40 के दशक की संगीतमयी फिल्मों की ओर दर्शक उनके भाव प्रवण अभिनय और दिलकश गायकी के कारण खिंचे चले आते थे। कुन्दन लाल सहगल अपने चहेतों के बीच के. एल. सहगल के नाम से मशहूर थे।

कोलकाता के न्यू थियेटर के बी.एन. सरकार ने उन्हें 200 रूपए मासिक पर अपने यहां काम करने का मौक दिया। यहां उनकी मुलाकात संगीतकार आर.सी. बोराल से हुई, जो सहगल की प्रतिभा से काफ़ी प्रभावित हुए। शुरुआती दौर में बतौर अभिनेता वर्ष 1932 में प्रदर्शित एक उर्दू फिल्म 'मोहब्बत के आंसू' में उन्हें काम करने का मौका मिला। वर्ष 1932 में ही बतौर कलाकार उनकी दो और फिल्में 'सुबह का सितारा' और 'जिंदा लाश' भी प्रदर्शित हुईं, लेकिन इन फिल्मों से उन्हें कोई खास पहचान नहीं मिली।

वर्ष 1933 में प्रदर्शित फिल्म 'पुराण भगत' की कामयाबी के बाद बतौर गायक सहगल कुछ हद तक फिल्म उद्योग में अपनी पहचान बनाने में सफल हो गए। वर्ष 1933 में ही प्रदर्शित फिल्म 'यहूदी की लड़की', 'चंडीदास' और 'रूपलेखा' जैसी फिल्मों की कामयाबी से उन्होंने दर्शकों का ध्यान अपनी गायकी और अदाकारी की ओर आकर्षित किया।

वर्ष 1935 में शरत चंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास पर आधारित पी.सी. बरूआ निर्देशित फिल्म 'देवदास' की कामयाबी के बाद बतौर गायक-अभिनेता सहगल शोहरत की बुलंदियों पर जा पहुंचे। कई बंगाली फिल्मों के साथ-साथ न्यू थियेटर के लिए उन्होंने 1937 में 'प्रेसिडेंट', 1938 में 'साथी' और 'स्ट्रीट सिंगर' तथा वर्ष 1940 में 'जिंदगी' जैसी कामयाब फिल्मों को अपनी गायिकी और अदाकारी से सजाया। वर्ष 1941 में सहगल मुंबई के रणजीत स्टूडियो से जुड़े

गए। वर्ष 1942 में प्रदर्शित उनकी 'सूरदास' और 1943 में 'तानसेन' ने बॉक्स ऑफिस पर सफलता का नया इतिहास रचा। वर्ष 1944 में उन्होंने न्यू थियेटर की ही निर्मित फिल्म 'मेरी बहन' में भी काम किया।

सहगल की उदारता के कई किस्से मिलते हैं। कहते हैं कि न्यू थिएटर्स के ऑफिस से उनकी सैलरी सीधे उनके घर पहुंचाई जाती थी, क्योंकि अगर उनके हाथ में पैसे होते, तो आधा वह शराब में उड़ा देते, बाकी जरूरतमंदों में बांट देते। एक बार उन्होंने पुणे में एक विधवा को हीरे की अंगूठी दे दी थी।

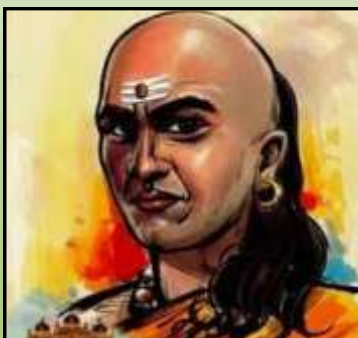
सहगल को खाना बनाने का बहुत शौक था। मुगलई मीट डिश वह बहुत चाव से बनाते थे और स्टूडियो में ले जाकर साथियों को भी खिलाते थे। यही नहीं, आवाज की चिंता किए बगैर वह अचार, पकौड़ा और तैलीय चीज भी खूब खाते थे।



सहगल ने गालिब की करीब बीस ग़ज़लों को अपनी आवाज का नूर दिया। गालिब से इसी मुहब्बत के कारण उन्होंने एक बार उनके मजार की मरम्मत करवाई थी। सहगल पहले गायक थे, जिन्होंने गानों पर रॉयल्टी शुरू की। उस वक्त प्रचार और प्रसार की दिक्कत के बावजूद वे श्रीलंका, ईरान, इराक, इंडोनेशिया, अफगानिस्तान और फिजी में सुने जाते थे। आज भी 18 जनवरी को कई देशों में सहगल की याद में संगीत जलसे होते हैं।

वह विग लगाकर एक्टिंग करते थे। अभिनेत्री कानन देवी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है, 'साथी की शूटिंग के दौरान हवा के झोंके से उनकी विग उड़ गई और उनका गंजा सिर दिखने लगा। लेकिन सहगल अपनी धुन में मगन शॉट देते रहे। इस पर दर्शक हंस पड़े। सहगल झेंपने की जगह लोगों के ठहाकों में शामिल हो गए। अपने दो दशक के सिने करियर में सहगल ने 36 फिल्मों में अभिनय भी किया। हिंदी फिल्मों के अलावा उन्होंने उर्दू, बंगाली और तमिल फिल्मों में भी अभिनय किया। सहगल ने अपने संपूर्ण सिने करियर के दौरान लगभग 185 गीत गाए, जिनमें 142 फ़िल्मी और 43 गैर-फ़िल्मी गीत शामिल हैं। अपनी दिलकश आवाज से सिने प्रेमियों के दिल पर राज करने वाले के.एल.सहगल 18 जनवरी, 1947 को केवल 43 वर्ष की उम्र में इस संसार को अलविदा कह गए।

— दीपक कुमार



मनुष्य सुबह से शाम तक काम करके उतना नहीं थकता जितना क्रोध और चिंता से एक क्षण में थक जाता है।

भारतीय संस्कृति में पुराण

पुराण' का शाब्दिक अर्थ है - 'प्राचीन आख्यान' या 'पुरानी कथा'। 'पुरा' शब्द का अर्थ है - अनागत एवं अतीत। 'अण' शब्द का अर्थ होता है - कहना या बतलाना। सांस्कृतिक अर्थ से हिन्दू संस्कृति के वे विशिष्ट धर्मग्रंथ जिनमें सृष्टि से लेकर प्रलय तक का इतिहास-वर्णन शब्दों से किया गया हो, पुराण कहे जाते हैं। पुराण शब्द का उल्लेख वैदिक युग के वेद सहित आदि साहित्य में भी पाया जाता है अतः ये सबसे पुरातन माने जा सकते हैं।

पुराण में लिखित ज्ञान और नैतिकता की बातें आज भी प्रासंगिक, अमूल्य तथा मानव सभ्यता की आधारशिला हैं। वेदों की भाषा तथा शैली कठिन है। पुराण उसी ज्ञान के सहज तथा रोचक संस्करण हैं। उन में जटिल तथ्यों को कथाओं के माध्यम से समझाया गया है। पुराणों का विषय नैतिकता, विचार, भूगोल, खगोल, राजनीति, संस्कृति, सामाजिक परम्परायें, विज्ञान तथा अन्य विषय हैं। विशेष तथ्य यह है कि पुराणों में देवी-देवताओं, राजाओं, और ऋषि-मुनियों के साथ साथ जन साधारण की कथायें भी उल्लेख की गयी हैं जिस से पौराणिक काल के सभी पहलूओं का चित्रण मिलता है।

महर्षि वेदव्यास ने 18 पुराणों का संस्कृत भाषा में संकलन किया है। ब्रह्मा विष्णु तथा महेश्वर उन पुराणों के मुख्य देव हैं। त्रिमूर्ति के प्रत्येक भगवान् स्वरूप को छः पुराण समर्पित किये गये हैं। इन 18 पुराणों के अतिरिक्त 16 उप-पुराण भी हैं। मुख्य पुराणों का वर्णन इस प्रकार है:-

पद्म पुराण – पद्म पुराण में 55000 श्लोक हैं और यह ग्रंथ पाँच खण्डों में विभाजित है जिन के नाम सृष्टिखण्ड, स्वर्गखण्ड, उत्तरखण्ड, भूमिखण्ड तथा पातालखण्ड हैं। इस ग्रंथ में पृथ्वी आकाश, तथा नक्षत्रों की उत्पत्ति के बारे में उल्लेख किया गया है। चार प्रकार से जीवों की उत्पत्ति होती है जिन्हें उदिभज, स्वेदज, अण्डज तथा जरायुज की श्रेणा में रखा गया है। यह वर्गीकरण पूर्णतया वैज्ञानिक है। भारत के सभी पर्वतों तथा नदियों के बारे में भी विस्तारित वर्णन है। इस पुराण में शकुन्तला दुष्यन्त से ले कर भगवान् राम तक के कई पूर्वजों का इतिहास है। शकुन्तला दुष्यन्त के पुत्र भरत के नाम से हमारे देश का नाम जम्बूद्वीप से भरतखण्ड और तत्पश्चात् भारत पड़ा था।

ब्रह्म पुराण – ब्रह्म पुराण सब से प्राचीन है। इस पुराण में 246 अध्याय तथा 14000 श्लोक हैं। इस ग्रंथ में ब्रह्मा की महानता के अतिरिक्त सृष्टि की उत्पत्ति, गंगा अवतरण तथा रामायण और कृष्णावतार की कथायें भी संकलित हैं। इस ग्रंथ से सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर सिन्धु घाटी सभ्यता तक की कुछ न कुछ जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

विष्णु पुराण – विष्णु पुराण में 6 अंश तथा 23000 श्लोक हैं। इस ग्रंथ में भगवान् विष्णु, बालक ध्रुव, तथा कृष्णावतार की कथायें संकलित हैं। इस के अतिरिक्त सम्राट् पृथु की कथा भी शामिल है जिस के कारण हमारी धरती का नाम पृथ्वी पड़ा था। इस पुराण में सूर्यवंशी तथा चन्द्रवंशी राजाओं का इतिहास है। विष्णु पुराण वास्तव में एक ऐतिहासिक ग्रंथ है।

शिव पुराण – शिव पुराण में 24000 श्लोक हैं तथा यह सात संहिताओं में विभाजित है। इस ग्रंथ में भगवान शिव की महानता तथा उन से सम्बन्धित घटनाओं को दर्शाया गया है। इस ग्रंथ को वायु पुराण भी कहते हैं। इस में कैलास पर्वत, शिवलिंग तथा रुद्राक्ष का वर्णन और महत्व, सप्ताह के दिनों के नामों की रचना, प्रजापतियों तथा काम पर विजय पाने के सम्बन्ध में वर्णन किया गया है। सप्ताह के दिनों के नाम हमारे सौर मण्डल के ग्रहों पर आधारित हैं और आज भी लगभग समस्त विश्व में प्रयोग किये जाते हैं।

भागवत पुराण – भागवत पुराण में 18000 श्लोक हैं तथा 12 स्कंध हैं। इस ग्रंथ में अध्यात्मिक विषयों पर वार्तालाप है। भक्ति, ज्ञान तथा वैराग्य की महानता को दर्शाया गया है। विष्णु और कृष्णावतार की कथाओं के अतिरिक्त महाभारत काल से पूर्व के कई राजाओं, ऋषि मुनियों तथा असुरों की कथाएँ भी संकलित हैं। इस ग्रंथ में महाभारत युद्ध के पश्चात श्रीकृष्ण का देहत्याग, द्वारिका नगरी के जलमग्न होने और यदुवंशियों के नाश तक का विवरण भी दिया गया है।

नारद पुराण – नारद पुराण में 25000 श्लोक हैं तथा इस के दो भाग हैं। इस ग्रंथ में सभी 18 पुराणों का सार दिया गया है। प्रथम भाग में मन्त्र तथा मृत्यु पश्चात के क्रम आदि के विधान हैं। गंगा अवतरण की कथा भी विस्तार पूर्वक दी गयी है। दूसरे भाग में संगीत के सातों स्वरों, सप्तक के मन्द्र, मध्य तथा तार स्थानों, मूर्छनाओं, शुद्ध एवम् कूट तानों और स्वरमण्डल का ज्ञान लिखित है। संगीत पद्धति का यह ज्ञान आज भी भारतीय संगीत का आधार है। जो पाश्चात्य संगीत की चकाचौंध से चकित हो जाते हैं उन के लिये उल्लेखनीय तथ्य यह है कि नारद पुराण के कई शताब्दी पश्चात तक भी पाश्चात्य संगीत में केवल पाँच स्वर होते थे तथा संगीत की थियोरी का विकास शून्य के बराबर था। मूर्छनाओं के आधार पर ही पाश्चात्य संगीत के स्केल बने हैं।

मार्कण्डेय पुराण – अन्य पुराणों की अपेक्षा यह छोटा पुराण है। मार्कण्डेय पुराण में 9000 श्लोक तथा 137 अध्याय हैं। इस ग्रंथ में सामाजिक न्याय और योग के विषय में ऋषि मार्कण्डेय तथा ऋषि जैमिनि के मध्य वार्तालाप है। इस के अतिरिक्त भगवती दुर्गा तथा श्रीकृष्ण से जुड़ी हुयी कथाएँ भी संकलित हैं।

अग्नि पुराण – अग्नि पुराण में 383 अध्याय तथा 15000 श्लोक हैं। इस पुराण को भारतीय संस्कृति का ज्ञानकोष कह सकते हैं। इस ग्रंथ में मत्स्यावतार, रामायण तथा महाभारत की संक्षिप्त कथाएँ भी संकलित हैं। इस के अतिरिक्त कई विषयों पर वार्तालाप है जिन में धनुर्वेद, गन्धर्व वेद तथा आयुर्वेद मुख्य हैं। धनुर्वेद, गन्धर्व वेद तथा आयुर्वेद को उप-वेद भी कहा जाता है।

भविष्य पुराण – भविष्य पुराण में 129 अध्याय तथा 28000 श्लोक हैं। इस ग्रंथ में सूर्य का महत्व, वर्ष के 12 महीनों का निर्माण, भारत के सामाजिक, धार्मिक तथा शैक्षिक विधानों आदि कई विषयों पर वार्तालाप है। इस पुराण में साँपों की पहचान, विष तथा विषदंश सम्बन्धी महत्वपूर्ण जानकारी भी दी गयी है। इस पुराण की कई कथाएँ बाईबल की कथाओं से भी मेल खाती हैं। इस पुराण में पुराने राजवंशों के अतिरिक्त भविष्य में आने वाले नन्द वंश, मौर्य वंशों, मुगल वंश, छत्रपति शिवा जी और महारानी विक्टोरिया तक का वृत्तान्त भी दिया गया है। ईसा के भारत आगमन तथा मुहम्मद और कुतुबुद्दीन ऐबक का जिक्र भी इस पुराण में दिया गया है। इस के अतिरिक्त विक्रम बेताल तथा बेताल पच्चीसी की कथाओं का विवरण भी है। सत्य नारायण की कथा भी इसी पुराण से ली गयी है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण – ब्रह्मवैवर्त पुराण में 18000 श्लोक तथा 218 अध्याय हैं। इस ग्रंथ में ब्रह्मा, गणेश, तुलसी, सावित्री, लक्ष्मी, सरस्वती तथा कृष्ण की महानता को दर्शाया गया है तथा उन से जुड़ी हुयी कथाएँ संकलित हैं। इस पुराण में आयुर्वेद सम्बन्धी ज्ञान भी संकलित है।

लिंग पुराण – लिंग पुराण में 11000 श्लोक और 163 अध्याय हैं। सृष्टि की उत्पत्ति तथा खगोलिक काल में युग, कल्प आदि की तालिका का वर्णन है। राजा अम्बरीष की कथा भी इसी पुराण में लिखित है। इस ग्रंथ में अघोर मंत्रों तथा अघोर विद्या के सम्बन्ध में भी उल्लेख किया गया है।

वराह पुराण – वराह पुराण में 217 स्कन्ध तथा 10000 श्लोक हैं। इस ग्रंथ में वाराह अवतार की कथा के अतिरिक्त भागवत गीता महात्म्य का भी विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। इस पुराण में सृष्टि के विकास, स्वर्ग, पाताल तथा अन्य लोकों का वर्णन भी दिया गया है। श्राद्ध पद्धति, सूर्य के उत्तरायण तथा दक्षिणायन विचरने, अमावस और पूर्णमासी के कारणों का वर्णन है। महत्व की बात यह है कि जो भूगोलिक और खगोलिक तथ्य इस पुराण में संकलित हैं वही तथ्य पाश्चात्य जगत के वैज्ञानिकों को पंद्रहवीं शताब्दी के बाद पता चला।

स्कन्द पुराण – स्कन्द पुराण सब से विशाल पुराण है तथा इस पुराण में 81000 श्लोक और छः खण्ड हैं। स्कन्द पुराण में प्राचीन भारत का भूगोलिक वर्णन है जिसमें 27 नक्षत्रों, 18 नदियों, अरुणाचल प्रदेश का सौंदर्य, भारत में स्थित 12 ज्योतिर्लिंगों, तथा गंगा अवतरण के आख्यान शामिल हैं। इसी पुराण में स्याहाद्री पर्वत श्रृंखला तथा कन्या कुमारी मन्दिर का उल्लेख भी किया गया है। इसी पुराण में सोमदेव, तारा तथा उन के पुत्र बुद्ध ग्रह की उत्पत्ति की अलंकारमयी कथा भी है।

वामन पुराण – वामन पुराण में 95 अध्याय तथा 10000 श्लोक तथा दो खण्ड हैं। इस पुराण का केवल प्रथम खण्ड ही उपलब्ध है। इस पुराण में वामन अवतार की कथा विस्तार से कही गयी है जो भरुचकच्छ (गुजरात) में हुआ था। इस के अतिरिक्त इस ग्रंथ में भी सृष्टि, जम्बूद्वीप तथा अन्य सात द्वीपों की उत्पत्ति, पृथ्वी की भूगोलिक स्थिति, महत्वशाली पर्वतों, नदियों तथा भारत के खण्डों का जिक्र है।

कुर्मा पुराण – कुर्मा पुराण में 18000 श्लोक तथा चार खण्ड हैं। इस पुराण में चारों वेदों का सार संक्षिप्त रूप में दिया गया है। कुर्मा पुराण में कुर्मा अवतार से सम्बन्धित सागर मंथन की कथा विस्तार पूर्वक लिखी गयी है। इस में ब्रह्मा, शिव, विष्णु, पृथ्वी, गंगा की उत्पत्ति, चारों युगों, मानव जीवन के चार आश्रम धर्मों, तथा चन्द्रवंशी राजाओं के बारे में भी वर्णन है।

मतस्य पुराण – मतस्य पुराण में 290 अध्याय तथा 14000 श्लोक हैं। इस ग्रंथ में मतस्य अवतार की कथा का विस्तारित उल्लेख किया गया है। सृष्टि की उत्पत्ति हमारे सौर मण्डल के सभी ग्रहों, चारों युगों तथा चन्द्रवंशी राजाओं का इतिहास वर्णित है। कच, देवयानी, शर्मिष्ठा तथा राजा ययाति की रोचक कथा भी इसी पुराण में है।

गरुड़ पुराण – गरुड़ पुराण में 279 अध्याय तथा 18000 श्लोक हैं। इस ग्रंथ में मृत्यु पश्चात की घटनाओं, प्रेत लोक, यम लोक, नरक तथा 84 लाख योनियों के नरक स्वरूपी जीवन आदि के बारे में विस्तार से बताया गया है। इस पुराण में कई सूर्यवंशी तथा चन्द्रवंशी राजाओं का वर्णन भी है।

ब्रह्माण्ड पुराण – ब्रह्माण्ड पुराण में 12000 श्लोक तथा पूर्व, मध्य और उत्तर तीन भाग हैं। मान्यता है कि अध्यात्म रामायण पहले ब्रह्माण्ड पुराण का ही एक अंश था जो अभी एक पृथक ग्रंथ है। इस पुराण में ब्रह्माण्ड में स्थित ग्रहों के बारे में वर्णन किया गया है। सृष्टि की उत्पत्ति के समय से लेकर अभी तक सात मनवन्तर बीत चुके हैं जिन का विस्तारित वर्णन इस ग्रंथ में किया गया है। परशुराम की कथा भी इस पुराण में दी गयी है। इस ग्रंथ को विश्व का प्रथम खगोल शास्त्र कह सकते हैं।

स्वच्छता एवं जैव शौचालय

अच्छी गुणवत्ता वाले घरों से ही स्वस्थ परिवार तथा स्वस्थ गाँव का निर्माण संभव है। अव्यवस्थित घर की बनावट से कई तरह की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं और संचरणीय बीमारी, तनाव व अवसाद जैसी समस्याएँ सहज ही उत्पन्न हो सकती हैं। तंग एवं भीड़-भाड़ वाली स्थिति गंदगी बढ़ाने में मदद करती है और बीमारी के फैलने को उचित माहौल उपलब्ध कराती है। घर में गंदगी का माहौल भोजन एवं जल के दूषित होने की संभावना पैदा करता है। घर के भीतर स्वच्छ हवा का अभाव श्वसन समस्या को एवं अपर्याप्त प्रकाश की व्यवस्था दृष्टिगत समस्या को उत्पन्न कर सकता है। अव्यवस्थित रूप से निर्मित घरों में रहने वाले लोगों में तनाव की समस्या अधिक होती है। इसका कारण अस्वच्छता एवं कम प्रकाश तथा सीलन भरा वातावरण होता है।

घरों में खराब प्रकाश की व्यवस्था मानव व उसके स्वास्थ्य पर काफी बुरा प्रभाव डाल सकता है। यह मुख्य रूप से महिलाओं के लिए विशेष रूप से चिंताजनक है जो घरों के भीतर रहकर खाना पकाने का कार्य करती हैं। घरों में अधिक खिड़की की व्यवस्था कर प्राकृतिक प्रकाश की व्यवस्था की जा सकती है और इस तरह के समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। यदि सुरक्षा का मामला हो तो खिड़की को ऐसे स्थान पर लगाया जा सकता है जहाँ से बाहर के लोग घर के भीतर नहीं देख सकें या उसे तार की जाली के साथ लगाया जा सकता है जिससे होकर प्रकाश का भीतर आना संभव होता है। पर्याप्त मात्रा में सूर्य का प्रकाश घर की सफाई के लिए भी काफी जरूरी है। यदि घर में अँधेरा हो तो वहाँ जमे धूल एवं गंदगी को देखना मुश्किल होता और उसे साफ करना भी संभव नहीं हो पाता। इससे घरों में सीलन की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

ऐसे घर जहाँ लकड़ी, कोयला एवं गोबर का उपयोग खाना बनाने या घर को गर्म रखने के लिए किया जाता है, उन घरों में हवा के आवागमन के लिए पर्याप्त मात्रा में जगह होनी चाहिए क्योंकि जब ये ईंधन धुँआँ छोड़ते हैं तो उसमें खतरनाक कार्बन डाई आक्साइड, कार्बन मोनोआक्साइड, एवं कुछ अवांछित गैसों के साथ साथ सूक्ष्म कण शामिल होते हैं। इससे श्वसन संबंधी समस्याएँ जैसे ब्रोंकाइटिस एवं अस्थमा जैसे रोग हो सकते हैं और इससे क्षय रोग, तपेदिक, यक्ष्मा रोग के फैलाव को उचित अवसर उपलब्ध हो सकता है। यदि महिलाएँ एवं बच्चे घरों में या रसोई में ज्यादा समय बिताती हैं तो और वहाँ हवा के आवागमन की व्यवस्था ठीक नहीं रहने से उनका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। जिन घरों में भोजन घर के भीतर बनाया जाता है वहाँ ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि धुँआँ शीघ्र ही घर से निकल जाए। इस समस्या का समाधान ऐसे घरों का निर्माण कर किया जा सकता है जिसमें अधिक से अधिक खिड़की की व्यवस्था हो और विशेष कर रसोई घर में यह व्यवस्था अवश्य रूप से होनी चाहिए।

घर को साफ रखकर घर के भीतर कीड़े - मकोड़ों के प्रवेश को रोका जाएं अन्यथा घर रोग वाहकों से दूषित हो सकता है। भोजन को ढककर एवं कूड़ा-करकट की साफ-सफाई कर रोगवाहक कीड़े की संख्या घटाई जा सकती है। यदि मच्छर या मक्खी समस्या उत्पन्न कर रही हो तो खिड़की एवं घर के दरवाजों को जालीदार कपड़ों से ढका जाना चाहिए, रात में उसे बंद रखना चाहिए एवं बिछावन पर नियमित रूप से मच्छरदानी लगानी चाहिए। घर के आसपास की सफाई भी अत्यंत आवश्यक है। इससे अनावश्यक रूप से बीमारी के फैलने को कम किया जा सकता है।

घरों में अधिक भीड़-भाड़ भी बीमारी का कारण होता है क्योंकि वहाँ बड़ी आसानी से बीमारी फैलती है क्योंकि कम जगह के कारण लोग हमेशा तनाव में रहते हैं और रोगों के शिकार होते रहते हैं। गरीबों के पास अक्सर सीमित विकल्प होता है और वे सीमित जगह में ही रहने को मजबूर होते हैं। आर्थिक स्थिति के कारण यदि उपयुक्त घरों का निर्माण

कराना संभव नहीं हो तो ऐसी स्थिति में व्यक्ति को अधिकांश समय हवादार जगह में रहने की कोशिश करनी चाहिए। इससे शरीर पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव को रोका जा सकता है।

शौचालय

आमतौर पर शौच आदि के लिए सजल शौचालय या गड्ढा शौचालय बनाए जाते हैं। इन दोनों से ही भूजल दूषित होता है और पर्यावरण भी असंतोषजनक हो जाता है। यहां तक कि जल संसाधनों से परिपूर्ण क्षेत्रों में भी पर्याप्त सेनिटेशन की कमी के चलते भूजल इतना दूषित हो गया है कि बहुत से कुएं बेकार हो गए हैं। सेनिटेशन और जलापूर्ति दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं। पानी मुहैया न होने की वजह से कई ग्रामीण अंचलों में शौचालय बेकार हो गए हैं।

फ्लश लैट्रिन के आविष्कार के 100 साल बाद भी आज दुनिया में सिर्फ कुछ लोगों के पास ही आधुनिक विकास का यह प्रतीक पहुंच पाया है और फ्लश लैट्रिन होने के बावजूद भी बगैर किसी ट्रीटमेंट के इस मल का 95% से अधिक हिस्सा आज भी नदियों के माध्यम से समुद्र में पहुंचता रहता है।

दुनिया के लगभग आधे लोगों के पास पिट लैट्रिन है जहां मल गड्ढे में इकट्ठा होता है और आंकड़ों के अनुसार इनमें से अधिकतर से मल रिस रिस कर जमीन के पानी को दूषित कर रहा है। भारत के ग्रामीण इलाकों में सिर्फ तीन प्रतिशत लोगों के पास



फ्लश टायलेट हैं जबकि शहरों में भी यह आंकड़ा एक चौथाई को पार नहीं कर पाया है।

हमारे मल में पैथोजेन होते हैं जो सम्पर्क में आने पर हमारा नुकसान करते हैं। इसलिये मल से दूर रहने की सलाह दी जाती है। पर आधुनिक विज्ञान कहता है यदि पैथोजेन को उपयुक्त माहौल न मिले तो वह थोड़े दिन में नष्ट हो जाते हैं और मनुष्य का मल उसके बाद बहुत अच्छे खाद में परिवर्तित हो जाता है जिसे कम्पोस्ट कहते हैं। मल में पानी मिलाने से उसके पैथोजेन को जीवन मिलता है वह मरता नहीं। मल को मिट्टी या राख से ढक दीजिये तो वह खाद बन जाती है।

वैज्ञानिकों के अनुसार एक मनुष्य प्रतिवर्ष औसतन जितना मल मूत्र का त्याग करता है उससे बने खाद से लगभग उतने ही भोजन का निर्माण होता है जितना उसे सालभर जन्दा रहने के लिये जरूरी होता है। यह जीवन चक्र है। रासायनिक खाद में भी हम नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम का उपयोग करते हैं। मनुष्य के मल एवं मूत्र उसके बहुत अच्छे स्रोत हैं।

शौचालय की साफ सफाई

शहरों के बाहर, गांवों और कठोर चट्टानी इलाकों के घरों में या तो ठोस तकनीकी समाधान हैं ही नहीं और जो हैं वे बहुत मंहगे हैं। ऐसे में निर्जल क्षेत्र में खाद शौचालय ही एकमात्र समाधान है। खाद शौचालय में मल एकत्रित होता है और यह मल को भूजल या जल निकायों को प्रदूषित किए बिना पौधों की वृद्धि के लिए खाद में बदल लेता है।

इकोजैन

टिनड्रम और बैरल पैन के आगे का भाग मूत्र के लिए और ढक्कन वाला भाग मल के लिए है। शौचालय का प्रयोग करने के बाद मल को बुरादे से ढक दिया जाता है। यदि कागज का प्रयोग किया जाता है तो उसे भी उसी भाग में डालें

जहां मल जाता है, विकल्प के रूप में पानी भी वहां डाला जा सकता है। महत्वपूर्ण है पूरे भाग को बुरादे से ढकना। इससे वहां न तो कोई दुर्गन्ध होगी, न ही मक्खी मच्छर आदि होंगे। मूत्र को प्लास्टिक के बैरल में इकट्ठा करते हैं और उसे 1:3 या 1:8 के अनुपात से पानी मिलाकर पौधों, खासतौर पर पेड़ों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है जहां यह नाइट्रोजन तत्व वाली अच्छी उर्वरक बनाता है।



मल को एक टिन के डिब्बे में इकट्ठा किया जाता है, जब डिब्बा भर जाए तो उसके स्थान पर दूसरा रख दिया जाता है फिर बड़े ड्रम में या गड्ढे में आगे की प्रक्रिया के लिए डाल दिया जाता है। इसे पत्तियों आदि से पूरी तरह ढककर उसे 6 महीने के लिए छोड़ दिया जाता है उसके बाद इसे मिट्टी के पोषक के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

रेलों में जैव शौचालय

परम्परागत शौचालयों से मल-मूत्र पटरी पर गिरता है, जबकि इसके विपरीत नये शौचालय में डिब्बों के नीचे लगे एक टैंक में अपशिष्ट को शोधित करने की व्यवस्था है। टैंक में मौजूद जीवाणु अपशिष्ट को ऐसी गैस और पानी में बदल देते हैं जो नुकसान दायक नहीं है। टैंक में बचे अवशेष नुकसान दायक जीवाणुओं से मुक्त होते हैं।

कपूरथला कोच फैक्टरी नये शौचालयों का निर्माण कर रही है जहां एक शौचालय तैयार करने में एक लाख रुपये खर्च आता है। तिरुवंतपुरम रेलवे डिवीजन के कर्मचारियों को जैव शौचालय वाले डिब्बों के रख-रखाव के लिए प्रशिक्षित किया गया है। जैव शौचालयों की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि यात्री इनका इस्तेमाल किस प्रकार से करते हैं। यात्रियों को सलाह दी गई है कि वे जैव शौचालयों में कोई बोतल, प्लास्टिक या नेपकिन न रखें।

जैव शौचालय से सुविधाएं :

- पर्यावरण के अनुकूल
- रासायनिक क्रिया और ऑक्सीकरण के कारण पटरी को होने वाले नुकसान को बचाना
- रेलवे स्टेशनों पर बेहतर सौन्दर्यीकरण

जैव शौचालय के फायदे :

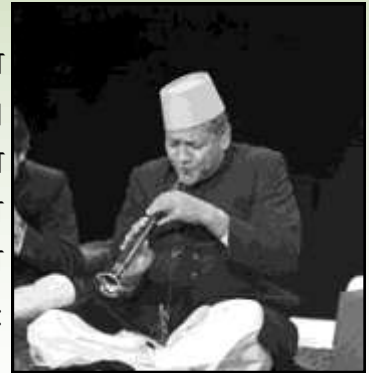
- रख-रखाव की कोई खास जरूरत नहीं
- सरल डिजाइन
- वर्तमान डिब्बों में आसानी से लगाया जा सकता है
- दो वर्ष तक काम में लाया जा सकता है

क्लोरीन टैंक से निकलने वाला पानी साफ पानी कहलाता है और गैस निकलकर वातावरण में चली जाती है। जीवाणु एक बार भर जाने पर तब तक रहते हैं, जब तक डिब्बे की दो वर्ष बाद जांच और मरम्मत नहीं कर ली जाती। अब वे दिन लद गये जब यात्रियों को ट्रेन में लंबी दूरी के सफर के दौरान डिब्बों में बदबू झेलनी पड़ेगी। रेलवे ने पर्यावरणनुकूल जैव शौचालय की दिशा में हरित पहल की है। रेलवे ने अपनी अनेक ट्रेनों में जैव शौचालयों की व्यवस्था कर रखी है तथा अनेक में किया जा रहा है। परंतु अभी भी इसका सही इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है जिससे ऐसे टायलेट अधिकांश मामलों में जाम हो जाया करते हैं। परंतु हमें स्वच्छ भारत स्वच्छ रेल का सपना साकार करना है।

बिस्मिल्लाह खाँ

बिस्मिल्लाह खाँ 'भारत रत्न' से सम्मानित प्रख्यात शहनाई वादक थे। बिस्मिल्लाह खाँ ने शहनाई को भारत के बाहर एक विशिष्ट पहचान दिलवाने में मुख्य योगदान दिया। वर्ष 1947 में देश की आजादी की पूर्व संध्या पर जब लालकिले पर भारत का तिरंगा फहरा रहा था, तब बिस्मिल्लाह खाँ की शहनाई भी वहाँ आजादी का संदेश सुना रही थी। तब से लगभग हर साल 15 अगस्त को प्रधानमंत्री के भाषण के बाद बिस्मिल्लाह खाँ का शहनाई वादन एक प्रथा बन गयी।

बिस्मिल्लाह खाँ का जन्म 21 मार्च, 1916 को बिहार के डुमरांव नामक स्थान पर हुआ था। उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ विश्व के सर्वश्रेष्ठ शहनाई वादक माने जाते थे। उनके परदादा नवाज उस्ताद सालार हुसैन खाँ से शुरू यह शहनाई परिवार पिछली पाँच पीढ़ियों से शहनाई वादन का प्रतिपादक रहा है। बिस्मिल्लाह खाँ को उनके चाचा अली बक्श 'विलायतु' ने संगीत की शिक्षा दी। उनके बचपन का नाम कमरुद्दीन था। वे अपने माता-पिता की दूसरी सन्तान थे। चूँकि उनके बड़े भाई का नाम शमशुद्दीन था अतः उनके दादा रसूल बख्श ने कहा-"बिस्मिल्लाह!" जिसका मतलब था "अच्छी शुरुआत! या श्रीगणेश" अतः घर वालों ने यही नाम रख दिया और आगे चलकर वे "बिस्मिल्ला खाँ" के नाम से मशहूर हुए।



उनके खानदान के लोग दरबारी राग बजाने में माहिर थे। बिहार के भोजपुर रियासत में अपने संगीत का हुनर दिखाने के लिये इस परिवार के लोग अक्सर जाया करते थे। उनके पिता बिहार की डुमरांव रियासत के महाराजा केशव प्रसाद सिंह के दरबार में शहनाई बजाया करते थे। 6 साल की उम्र में बिस्मिल्ला खाँ अपने बाप के साथ बनारस आ गये। वहाँ उन्होंने अपने चाचा अली बख्श 'विलायती' से शहनाई बजाना सीखा। उनके उस्ताद चाचा विलायती विश्वनाथ मन्दिर में स्थायी रूप से शहनाई-वादक का काम करते थे। यद्यपि बिस्मिल्ला खाँ शिया मुसलमान थे फिर भी वे अन्य हिन्दुस्तानी संगीतकारों की भाँति धार्मिक रीति रिवाजों के प्रबल पक्षधर थे और हिन्दू देवी-देवता में कोई फर्क नहीं समझते थे। वे ज्ञान की देवी सरस्वती के सच्चे आराधक थे। वे काशी के बाबा विश्वनाथ मन्दिर में जाकर तो शहनाई बजाते ही थे इसके अलावा वे गंगा किनारे बैठकर घण्टों रियाज भी किया करते थे। उनकी अपनी मान्यता थी कि उनके ऐसा करने से गंगा मड़िया प्रसन्न होती हैं।

बिस्मिल्ला खाँ ने 'बजरी', 'चैती' और 'झूला' जैसी लोकधुनों में बाजे को अपनी तपस्या और रियाज से खूब सँवारा और क्लासिकल मौसिकी में शहनाई को सम्मानजनक स्थान दिलाया। इस बात का भी उल्लेखनीय है कि जिस जमाने में बालक बिस्मिल्लाह ने शहनाई की तालीम शुरू की थी, तब गाने बजाने के काम को इज्जत की नजरों से नहीं देखा जाता था। खाँ साहब की माता जी शहनाई वादक के रूप में अपने बच्चे को कदापि नहीं देखना चाहती थीं। वे अपने पति से कहती थीं - "क्यों आप इस बच्चे को इस हल्के काम में झोक रहे हैं"।

'भारतीय शास्त्रीय संगीत' और संस्कृति की फिजा में शहनाई के मधुर स्वर घोलने वाले प्रसिद्ध शहनाई वादक बिस्मिल्ला खाँ शहनाई को अपनी बेगम कहते थे और संगीत उनके लिए उनका पूरा जीवन था। उन्होंने अपने अंतिम दिनों में दिल्ली के इंडिया गेट पर शहनाई बजाने की इच्छा व्यक्त की थी लेकिन उस्ताद की यह इच्छा पूरी नहीं हो पाई और 21 अगस्त, 2006 को 90 वर्ष की आयु में इनका देहावसान हो गया।

दयाल कजूर

आनलाइन डीजिटल जीवन प्रमाण पत्र

आधार आधारित जीवन प्रमाण पत्र सेवा निवृत्त हुए कर्मचारी को पेंशन, आश्रित/वैध उत्तराधिकारी को प्राप्य पारिवारिक पेंशन की लगातार प्राप्ति हेतु उन्हें बैंक या डाकघर में नियमित रूप से जाकर जीवन प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना पड़ता है। इसे प्राप्त करने में पेंशनरो को विभिन्न प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसे दूर करने के लिए पूर्व रेलवे, मुख्यालय के निर्देशानुसार मालदा मंडल ने भी अपने कल्याण अनुभाग में आनलाइन डीजिटल जीवन प्रमाण पत्र जारी करने के लिए कैप लगाया है। मंडल के मुख्यालय, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, मालदा के कल्याण अनुभाग में पारिवारिक पेंशनर स्वयं आकर अपना आनलाइन डीजिटल जीवन प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकते हैं।



बायोमेट्रिक्स पर अपने अंगूठे का निशान देता हुआ एक पेंशनर

इसके लिए उन्हें अपना आधार संख्या, पीपीओ संख्या, बैंक खाता, मोबाइल नं. आदि के विवरण साथ ही अपना अंगूठे के निशान बायोमेट्रिक्स पर लगाना होगा। इस प्रक्रिया के द्वारा पेंशनर का समूचा विवरण जीवन प्रमाण पोर्टल से सीधा लिंक हो जाएगा। लिंक होते ही उसे एक आईडी प्राप्त होगी। जिस आईडी के द्वारा ही उसका कार्य हो जाएगा तथा उसे कोई अलग से जीवन प्रमाण पत्र प्रस्तुत नहीं करना पड़ेगा।

अगली बार उन्हें बैंक डाकघर या अन्य उपलब्ध कंप्यूटर से पोर्टल में जाकर केवल उंगली के निशान ही बायोमेट्रिक्स पर देने होंगे जिससे ही जीवित होने का प्रमाण हो जाएगा। इस प्रयास को काफी सराहा जा रहा है तथा अब तक प्राप्त मंडल के 750 पेंशनरों के द्वारा प्राप्त किए गए डीजिटल जीवन प्रमाण पत्र का आंकड़ा यह बताने के लिए काफी है कि पेंशन और पारिवारिक पेंशन लिंक करवाने के लिए खासे लोगों में उत्साह है। यह कार्य बोर्ड के निर्देशानुसार नवंबर 2015 के प्रथम सप्ताह से लगातार चलते हुए जनवरी 2016 के अंतिम सप्ताह तक लगातार जारी रहा।

—दिव्येन्दु भट्टाचार्य

नई खोजें

भोजन के ताजगी की जानकारी देने वाला सेंसर

वैज्ञानिकों ने एक ऐसे सेंसर की खोज की है जो यह बताएगा कि खाना खराब हो गया है या नहीं। अनुसंधानकर्ताओं ने बताया कि यह सेंसर खाद्य सामग्री से एथेनॉल के उत्सर्जन को माप कर खाना के खराब होने की पहचान करेगा। इस सेंसर के संदेशों को बेतार संचार के माध्यम से मोबाइल फोन पर पढ़ा जा सकेगा। सेंसर से मिली जानकारी ग्राहक के पास तक पहुंचेगी और इससे संबद्ध डाटा एक सर्वर में सुरक्षित हो जाएगा। शोधार्थियों ने बताया कि इस एथेनॉल सेंसर का विकास फिनलैंड के टेक्निकल रिसर्च सेंटर ने किया है। सेंसर की सतह रेडियो तरंगों से पहचान करने वाले टैग का हिस्सा है, इसलिए इसके डाटा को स्मार्टफोन पर भी पढ़ा जा सकता है। यह सेंसर डिब्बाबंद खाने की ताजगी के बारे में भी सूचनाएं देता है।



गूगल के द्वारा तलाश लें अपना खोया फोन

गूगल ने एक ऐसी तकनीक इजाद की है, जो आपको गुम हुए स्मार्टफोन की जानकारी देती है। इस तकनीक का इस्तेमाल भी बेहद आसान बनाया गया है। कोई भी एंड्रॉयड फोन यूजर डेस्कटॉप पर गूगल सर्च का इस्तेमाल कर यह काम कर सकता है। गूगल ने कहा है कि यूजर्स को बस गूगल सर्च बार में 'फाइंड माय फोन' टाइप करना होगा और आपका स्मार्टफोन गूगल मैप पर ट्रैक हो जायेगा और फोन की लोकेशन आपको दिखायी देगी।

इतना ही नहीं गूगल सर्च में जाकर 'फाइंड माय फोन' टाइप करके लोकेशन ट्रैक करने के साथ-साथ आप फोन पर रिंग भी कर सकते हैं। आप जब रिंग बटन पर क्लिक करेंगे तो गूगल आपके स्मार्टफोन पर लगातार पांच मिनट तक घंटी बजायेगा। इस तरह आप आसानी से फोन तलाश सकते हैं।

गूगल की इस सेवा का इस्तेमाल करने से पहले यह सुनिश्चित कर लें कि आपके स्मार्टफोन में जीपीएस एक्टिव है। गूगल की यह सर्विस तभी कारगर है जब आपके स्मार्टफोन का जीपीएस ऑन हो। इतना ही नहीं फोन की चोरी होने पर यूजर्स इस फीचर के जरिए उसे लॉक कर डाटा नष्ट कर सकते हैं।

— मितू सिंह

ऋतुराज

फूल हुलस रहा कचनार है कुहुक रही कादंबरी
सज गई नदी नई पहन नवल पीतांबरी
हृदय का इजहार है विहार करने दो मुझे
चेतना के तार पे झूम प्यार करने दो मुझे ।

है हुलसित मधुमन मेरा मधुमास आगमन से यहाँ
गुलाबी ठंढक में जरा उच्छवास भरने दो मुझे
आई आग्रस पर मंजरिया वनफूल खिलखिला गये
मधुमंग गुंजार में मनुहार करने दो मुझे ।

सागर सब वन फुला वातावरण सुरभित हुआ
महूआ के टप-टप चुवन में हृदयबंध होने दो मुझे
वनांचल के आँचल से आती खुशबू यहाँ
चंद्रोदय की चंद्रिका में मदहोश होने दो मुझे ।

आकर प्रकृति के द्वार पे वसंत दस्तक दे रहा
झूमने दो नाचने दो, आज प्रियतम आयेंगे मेरे
हो रहा हर्षित मधुवन मेरा सजने संवरने दो मुझे
मन के अंतर्दीप से आरती उतारने दो मुझे ।

नैसर्गिक श्रृंगार से सजा उपहार पाने दो मुझे
रंग, अबीर, गुलाल अब उड़ा लेने दो मुझे
लता-गुल्म के बाहुओं में तरु झूमा, अब झूम हिलोरे लेने दो मुझे
नवल पुष्प कोमल पत्र दल से पथ सजाने दो मुझे ।

सज रहे गली कुचे, सज रहा सारा जहान
अब सजन आयेंगे मेरे, छाया है चहुँओर उल्लास
बिरह वेदना के तार से मन झंकृत होने दो मुझे
प्रमद चित से प्रिय मिलन को उत्कंठित होने दो मुझे ।

हो रहा बिहुल मेरा मन पपीहा के आतुर पिहक से
वासन्तिक रास के लिए वेणु बजाने दो मुझे
नूतन उमंग बटोर कर मन मदन के लिए
अमराइयों के अभिसार में अब जाने दो मुझे ।

— विजय कुमार

छाया समाचार

राजभाषा सप्ताह- 2015 के दौरान मालदा मंडल द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के दृश्य



चित्र वीथिका

राजभाषा सप्ताह- 2015 के दौरान मालदा मंडल द्वारा
आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी के दृश्य

